

चढु मुंहिजा मदन गोपाल घोड़ी आ संवारी।
नंद यशोदा जा बर वजां तोतां वारी॥

सोनिड़ी जीन रेशम जी दोरी आई मुल्तान खां अम्बलख घोड़ी।
चिन्तामणि चमके भाल दुति चमतकारी॥१॥

बृज ईशु बाबाहरिशि चढ़ाए वस्त्र भूषण घोरुं घुमाए।
लुटाए मुहुरुनि थाल सुरिति विसारी॥२॥

अमड़ि यशोदा आरती उतारे चन्द्र वदन लाल बनरे निहारे।
हथिड़ा मेंहदी अ लाल सुवनु सुकुमारी॥३॥

बरसाने वजीं जसिड़ो वधाई सुखु सौभाग्य सदां शल पाई।
करुणा सिंधु कृपालु करेई रखवारी॥४॥

दुर्लभु दुलहिनि मिलेई वद भागिणि शील स्नेह सिंधु अति अनुरागिणि।
कुलमणि श्री वृषभानु जीअ जियारी॥५॥

सांवल बने जो आ रूपु रसीलो सारे जग जो आ वाह वसीलो।
माणीं रसिड़ा रसाल बनलु बनवारी॥६॥

शोभा कल्पतरु रूप निधाना घर घर में थियनि मंगलगाना।
शंकर मानस मराल मैगसि मनठारी॥७॥